



## औरत की चूत की कामुकता-2

“पति के टूअर पर जाने के बाद अन्तर्वासना के लेखक से मेल पर बात के बाद मेरे अन्दर छिपी कामुकता उभर आई, जब मेरे पति दौरे से लौटे तो मैं चुदने को बेताब थी... और मेरे पति मुझे चोदने को !...”

Story By: मधुरा कोले (Madhura Kole)

Posted: Saturday, May 2nd, 2015

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [औरत की चूत की कामुकता-2](#)

## औरत की चूत की कामुकता-2

प्रिय पाठको, अब तक आपने पढ़ा था कि मेरे पति के 15 दिनों के लिए बाहर चले जाने से मुझे बहुत ही चुदास चढ़ने लगी थी। पन्द्रह दिनों के बाद जैसे ही मेरे पति विलास घर वापस आए तो हम दोनों तो जैसे एक-दूसरे में घुस जाने जैसा व्यवहार करने लगे थे.. और इसी बीच विलास के झड़ जाने से मैं बहुत व्याकुल हो उठी और विलास का लण्ड तो खड़े होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

अब आगे..

मैं अपना गाऊन पहनकर बाथरूम के बाहर आकर रसोई में काम करने लगी। तभी दरवाजे की घन्टी बज गई.. मैंने दरवाजा खोला तो बाबूजी आए थे। बाबूजी कपड़े बदल कर हॉल में टीवी पर प्रोग्राम देखने बैठ गए।

विलास भी नहाकर टी-शर्ट और हाफ पैन्ट पहन कर हॉल में बाबूजी के साथ बातें करते हुए बैठ गए।

अपना काम निपटाकर मैं भी हॉल में आकर विलास के बाजू में बैठ गई।

थोड़ी देर के बाद बाबूजी बोले- बहू खाना लगा दो।

तो विलास ने कहा- बाबूजी आप खाना खा लो.. मैं थोड़ी देर बाद खा लूँगा।

यह कह कर विलास अन्दर बेडरूम में चला गया। मैंने बाबूजी को खाना परोसा और बेडरूम में गई.. देखा तो विलास अलमारी से व्हिस्की की बोतल निकाल कर पैग मार रहे थे।

उसने मुझको आँखों से इशारा करके कुछ खाने के लिए लाने को कहा.. मैं रसोई से कुछ

नमकीन लाकर विलास को देकर उसके बाजू में बैठ गई ।

विलास मुझसे बातें करते-करते पैग लगा रहे थे.. तभी उसने अपना हाथ मेरी जांघ पर रख दिया । मैंने कुछ नहीं कहा.. फिर उसने धीरे-धीरे सहलाना चालू किया.. अब उसका पैग खतम हो गया था ।

विलास ने कहा- तुम भी एक पैग ले लो ।

मैंने कहा- छी ... मैं नहीं लूँगी ।

तो उसने जबरदस्ती की और बोला- ले लो.. तुम्हें मजा आएगा ।

मैं पहले से गरम हो गई थी.. उसकी ऐसी बातें सुनकर और गर्म हो गई, उसने मेरे मुँह से गिलास को लगा दिया । मैंने भी एक ही झटके में पूरा गिलास खाली कर दिया ।

बहुत खराब स्वाद लगा.. उसने मुझको नमकीन खाने को दिया ।

फिर उसने अपने लिए एक और पैग बनाया और धीरे-धीरे चुस्की लेकर पीने लगा ।

कुछ ही देर में मुझको चक्कर सा आने लगा.. मुझे अच्छा भी लग रहा था । मैंने अपना

हाथ उसके हाफ-पैण्ट के अन्दर डाला.. तो उसका खड़ा लंड मेरे हाथ में आ गया ।

वो खड़ा होकर बाहर आने के लिए तड़फ रहा था.. मैं उसे बाहर निकालकर आगे-पीछे करने लगी ।

विलास भी मेरे गाऊन के ऊपर के बटन खोलकर अन्दर हाथ डाल कर मेरे मम्मों को दबा रहा था ।

मेरे मुँह से 'अअह.. अहहह.. आआ.. अहहह..' की आवाजें आ रही थीं ।

तभी बाबूजी ने बाहर से आवाज़ दी ।

मैं फौरन वहाँ से उठकर बाबूजी के पास जाने लगी.. तो मेरे पैर लड़खड़ाए.. मैं अपने आप को संभालते हुए बाबूजी के पास गई.. उनका खाना हो चुका था ।

मैं झुक कर बर्तन उठाने लगी.. तो मैंने बाबूजी की ओर देखा ।  
बाबूजी की नजर मेरे मम्मों को देख रही थी ।  
मुझे याद आया कि मैं गाऊन के बटन लगाना भूल गई थी ।  
बाबूजी ने मेरी ओर देखा तो मैं लजा कर अन्दर रसोई में चली गई ।

बाबूजी ने कहा- मैं बाहर घूमकर आता हूँ.. तुम अन्दर से दरवाजा बंद कर लो ।  
मैंने मन ही मन में कहा- बाबूजी कितने समझदार हैं.. वो बाहर चले गए ।

मैं दरवाजा बंद करके विलास के पास गई विलास ने झट से मुझे पकड़ कर अपनी बाँहों में ले लिया और मेरे होठों पर होंठ रख कर चुम्बन करने लगा । मैं भी उसका साथ देने लगी ।

फिर उसने मेरे गाउन को निकाल कर फेंक दिया.. बाद में मेरी ब्रा भी निकाल कर मेरे मम्मों को आजाद कर दिया ।

अब मैं केवल पैन्टी में रह गई थी । मैंने भी विलास के पूरे कपड़े निकाल दिए ।

अब विलास बिल्कुल नंगा था और उसका लंड एकदम कड़क हो गया था, विलास ने मुझको जोर से धक्का दे दिया.. मैं सीधे बिस्तर पर जाकर गिर गई ।

फिर उसने मेरी पैन्टी खींचकर निकाल दी और मेरे दोनों पैर फैला दिए और कहा- व्वाऊ.. कितने दिनों के बाद तुम्हारी चूत के दीदार हुए सुरेखा..

वो सीधे मेरी टांगों के बीच में आकर मेरी चूत चाटने लगा.. उसने अपनी जीभ को मेरी चूत के अन्दर डालकर गोल-गोल घुमाने लगा ।

मैंने अपने हाथ से उसका सर दबाकर नीचे से कमर उठाकर उसे और जोर से चाटने को कहा । मुझे अपनी चूत चटवाना बहुत अच्छा लग रहा था । थोड़ी ही देर में मैंने उसका सर और जोर से दबाकर वैसे पकड़ कर रखा.. विलास समझ गया कि मेरी चूत ने पानी छोड़

दिया है।

मैंने हाथ हटाया और मैं वैसे ही हाल में पड़ी रही.. विलास ने मेरी चूत चाटकर पूरी साफ कर दी। फिर वो उठकर मुझको चुम्बन करने लगा.. उसने अपनी जीभ मेरे मुँह में डाल दी.. मुझको कुछ खट्टा और नमकीन सा स्वाद लगा।

वो एक हाथ से मेरे मम्मे दबा रहा था। मेरे मम्मों का आगे के काले चूचुक एकदम सख्त हो गए थे। वो मेरे मम्मों के साथ खेल रहा था.. और मैं उसके लंड के साथ खेल रही थी।

फिर मैं उठ गई.. उसका लंड अपने मुँह में लेकर चूसने लगी। मैं लॉलीपॉप की तरह उसका लंड चूस रही थी। वो भी मेरा सर पकड़ कर अपना लंड मेरे मुँह में डाल रहा था। उसका लंड काफी बड़ा हो गया था.. वो मेरे गले तक उतार रहा था। मुझको उल्टी सी होने लगी.. मैं उसका लंड मुँह से निकाल कर हाथ से हिलाने लगी।

अब विलास उठ गया और मेरे ऊपर आ गया.. उसने अपना लंड मेरी चूत के मुँह पर रखकर एक जोरदार धक्का मारा।

मेरे मुँह से चीख निकल गई- उउईई.. ममा.. मर गई!

उसका लंड एक ही झटके में मेरी चूत में पूरा घुस गया था।

वो थोड़ी देर वैसा रुक गया और फिर से धक्के मारने लगा। मैं भी उसे अपनी गांड उठाकर साथ देने लगी.. वो और जोर-जोर से चोट मारने लगा।

पूरे कमरे में 'फच.. फच..' ऐसी आवाजें आ रही थीं।

इसी दौरान मैं फिर से झड़ गई, मेरी चूत के पानी छोड़ने से आवाजें भी बढ़ गईं।

विलास फिर धक्के मार रहा था.. उसका लंड पानी छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था।

फिर हमने अपना आसन बदला... मैं विलास के ऊपर आ गई.. विलास ने अपना लंड मेरी

चूत पर सैट किया और नीचे से धक्के मारने लगा ।

मैं भी ऊपर-नीचे करके उसका साथ देती रही.. विलास बहुत ही जोर-जोर से धक्के मार रहा था.. ऐसा लग रहा था जैसे उसके अन्दर शैतान घुस गया हो ।

मैं तो बिल्कुल थक चुकी थी.. मैंने विलास से कहा- प्लीज़.. अब पानी छोड़ दो..

लेकिन वो माना ही नहीं.. उसने मुझको घोड़ी बनने को कहा.. मैं आगे की तरफ झुककर घोड़ी बन गई । वो पीछे से आया और थोड़ी दूर से एक जोरदार धक्का मारा ।

उसका लंड बिना किसी रुकावट से सीधा चूत के अन्दर चला गया । अब उसने मेरी कमर को पकड़ा और लण्ड को आगे-पीछे करने लगा ।

उसने अपनी रफ्तार बढ़ा दी.. मैं समझ गई कि उसका पानी छूटने ही वाला है और थोड़ी ही देर में उसने मेरी कमर को जोर से पकड़ा और अपनी ओर दबोच लिया ।

थोड़ी देर वैसे ही पकड़ कर खड़ा रहा.. मेरी चूत के अन्दर गरम-गरम पानी जाता हुआ सा लग रहा था । फिर थोड़ी देर हम नंगे ही बिस्तर पर पड़े रहे ।

अब मैं बहुत खुश हो गई थी.. क्योंकि बहुत दिनों के बाद मेरी प्यास बुझ गई थी ।

आपको मेरी कहानी कैसी लगी.. मुझको जरूर बताइएगा ।

madhurako1714@gmail.com

## Other stories you may be interested in

### मैं कैसे कॉलब्वॉय बन गया

अन्तर्वासना परिवार के सभी लोगों को मेरा नमस्कार. मेरा नाम विकास है और मैं प्रयागराज का रहने वाला हूँ. मैं कोई कहानी नहीं बताने जा रहा.. बल्कि एक असली किस्सा बता रहा हूँ, जो मेरे साथ हुआ है. यह किस्सा [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी मामी की तड़पती जवानी-2

रिश्तों में चुदाई की मेरी कहानी के पहले भाग मेरी मामी की तड़पती जवानी-1 में आपने अब तक पढ़ा कि दूर के रिश्ते में मेरे मामा मामी आये हुए थे. मैं और मामी एक दूसरे की तरफ वासनात्मक दृष्टि से [...]

[Full Story >>>](#)

### दीदी संग ओरल सेक्स का मजा

दोस्तो, मेरा नाम रवि है. मैं जोधपुर राजस्थान का रहना वाला हूँ. ये कोई कहानी नहीं, बल्कि एक सच्ची घटना है, जो कि मेरे ओर मेरी बड़ी कजिन के बीच घटी थी. ये बात 2008 की है. उस वक्त मैं [...]

[Full Story >>>](#)

### बगल वाली प्यारी चुदासी आंटी

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम सौरभ है, मैं अन्तर्वासना का पुराना पाठक हूँ. मैं अन्तर्वासना की अधिकतर कहानियाँ पढ़ चुका हूँ। हर बार एक दर्शक की तरह इन कहानियों का आनंद उठाता रहता हूँ। लेकिन इस बार मैंने मेरी ज़िंदगी की [...]

[Full Story >>>](#)

### बीमारी ने दिलायी प्यासी भाभी की चूत-6

दोस्तो, मेरी कहानी के पिछले भाग बीमारी ने दिलायी प्यासी भाभी की चूत-5 में आपने पढ़ा कि मैं जब काम से वापस आया, तो गीता के साथ मज़े किए और फिर वो अपने घर चली गयी. लेकिन जाते जाते वो [...]

[Full Story >>>](#)

